समकालीन भारत -1, 2 _ Pooja Chaudhary

उत्तरी गोलार्ध में स्थित है।

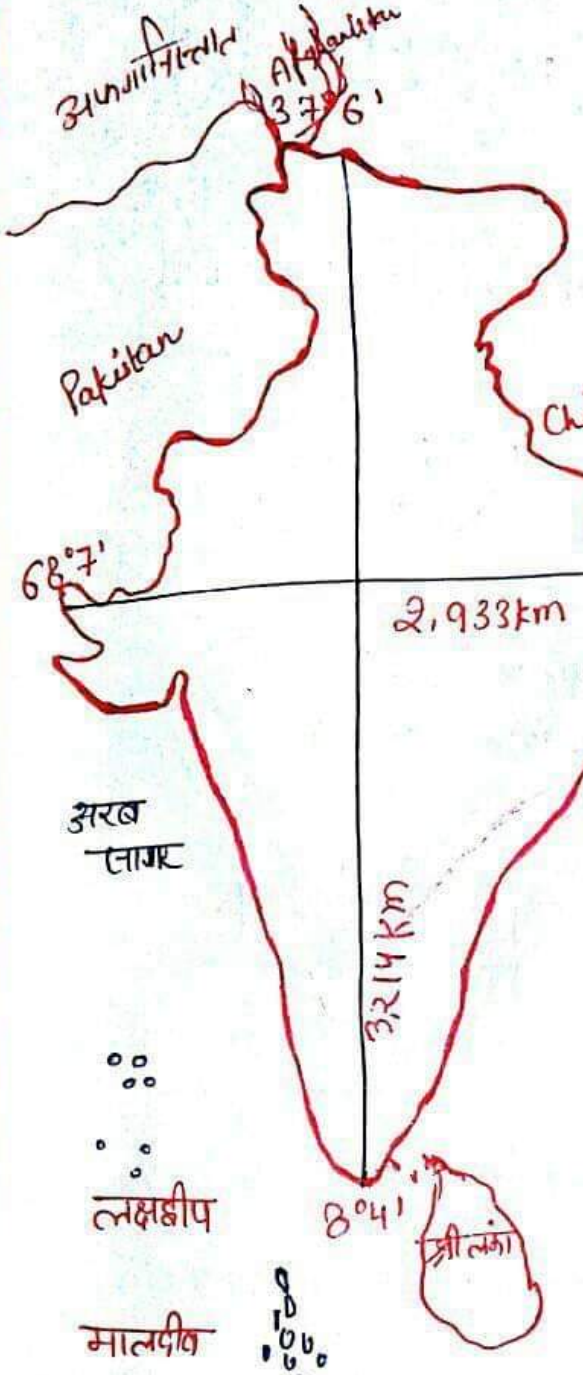

मुख्य भाग 8°4' उत्तर से 37°6' उत्तरी अक्षांश।

68°7' पूर्व से 97°25 पूर्व देशांतर

कर्क रेखा 23°30' उत्तर में देश को लगभग दो बराबर भागों में बांटती है

मुख्य भू - भाग के द० पूर्व में अंडमान और निकोबार है

भारत का क्षेत्रफल = 32·8 लाख वर्ग km.

विश्व के भौगोलिक क्षेत्रफल का 2·4%.

विश्व का 7वाँ बड़ा देश

स्थलीय सीमा रेखा - 15,200km

समुद्री तटरेखा अंडमान और निकोबार + लक्षद्वीप = 7,516·6 km

उत्तर-पश्चिम, उत्तर व उत्तर पूर्वी सीमा पर वलित पर्वत है।

द० का भू-भाग उत्तर में चौड़ा व 22° उत्तरी अक्षांश से हिंद महासागर की ओर सकरा होता गया है।

पश्चिम में अरब सागर व पूर्व में बंगाल की खाड़ी है।

अक्षांश व देशांतर का विस्तार लगभग 30° है।

गुजरात से अरुणाचल प्रदेश के स्थानीय समय में 2 घंटे का अंतर है

82°30' पूर्व देशांतर रेखा = भारत का मानक याम्योत्तर

हिंद महासागर → भारत को केन्द्रीय स्थिति प्रदान करता है।
↳ में किसी भी देश की सीमा (तटीय) भारत जैसी नहीं है
इस महत्वपूर्ण स्थिति के कारण इसे एक महासागर का नाम दिया गया है।

* सन् 1869 – स्वेज नहर खुली
लाभ:- भारत + यूरोप के बीच की दूरी 7,000 km कम हो गई है।

* द० एशिया में भारत का महत्वपूर्ण स्थान है।
* भारत में 29 राज्य + 7 केन्द्रशासित प्रदेश हैं।
* भारत की सीमा 7 देशों से लगती है

• पाकिस्तान (उत्तर पश्चिम)	• म्यामांर (पूर्व)
• अफगानिस्तान (" ")	• बांग्लादेश (पूर्व)
• B चीन (उत्तर)	
• नेपाल (")	
• भूटान (")	

Pooja Chaudhary

पड़ोसी द्वीप समूह राष्ट्र – (2)

श्रीलंका, मालदीव → लक्षद्वीप समूह में स्थित है।

भारत + Srilanka के बीच → छोटा रास्ता → पाक जलसंधि व मन्नार की खाड़ी है।

भारत का भौगोलिक स्वरूप – Ch-2

- पर्वत, मैदान, मरुस्थल, पठार, द्वीपसमूह → स्थलाकृतियाँ पाई जाती हैं।
- विभिन्न प्रकार की शैलें पाई जाती है → संगमरमर की तरह कठोर (ताजमहल), सेलखड़ी की तरह मुलायम (use in making of टैल्कम चूर्ण (Powder))
- मृदा के रंगों में भी भिन्नता पाई जाती है।

भारत का निर्माण – विभिन्न भूगर्भीय कालो के दौरान व ③ ④ अपक्षय, अपरदन, तथा निक्षेपणों के द्वारा वर्तमान उच्चावचों का निर्माण व संशोधन हुआ।

भूगर्भशास्त्रियो ने भौतिक आकृतियो के निर्माण की व्याख्या करने का प्रयास किया है जिनमें से सर्वमान्य सिद्धांत है –

• प्लेट विवर्तनिक सिद्धांत :- इस सिद्धांत के अनुसार, पृथ्वी की ऊपरी पर्पटी 7 बड़ी एवं कुछ छोटी प्लेटों से बनी है।

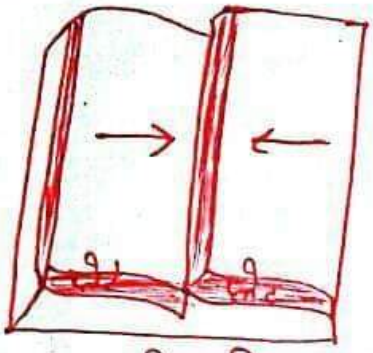

(a) अभिसारी परिसीमा

=> जब प्लेटें एक दूसरे के करीब आती हैं तो अभिसारी परिसीमा का निर्माण करती हैं।

* प्लेटो की गति के कारण => प्लेटो के अंदर व बाहर दवाब उत्पन्न होता है => परिणाम : वलन, भ्रंशीकरण, ज्वालामुखीय क्रियाएँ होती हैं।

Pooja Chaudhary

जब प्लेटे एक दूसरे से दूर => जाती हैं तो अपसारी परिसीमा का निर्माण करती हैं।

Pooja Chaudhary

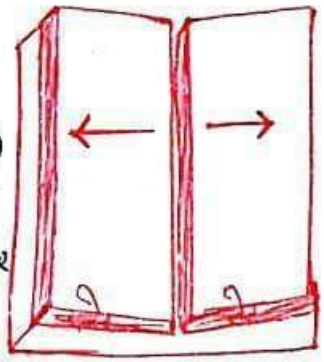

(b) अपसारी परिसीमा

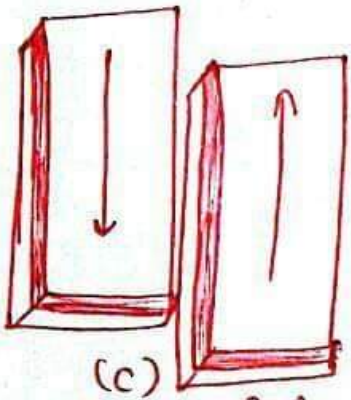

(c) रूपांतर परिसीमा

=> जब प्लेटे एक दूसरे के करीब आती है तब वे या तो टकराकर टूट सकती है या एक प्लेट फिसल कर दूसरी के नीचे आ सकती है।

कभी कभी एक दूसरे के साथ क्षैतिज दिशा में गति भी कर सकती है और इस तरह से रूपांतर परिसीमा का निर्माण करती हैं।

गोंडवाना → सबसे प्राचीन भू-भाग
↳ क्षेत्र – भारत, आस्ट्रेलिया, द० अफ्रीका, द० अमेरिका

मुख्य भौगोलिक विवरण :-

① हिमालय पर्वत श्रृंखला
② उत्तरी मैदान
③ प्रायद्वीपीय पठार
④ भारतीय मरुस्थल
⑤ तटीय मैदान
⑥ द्वीप समूह

Pooja Chaudhary

① हिमालय पर्वत -

हिमालय विश्व की सबसे ऊँची पर्वत श्रेणी है।
उत्तरी सीमा पर फैली है
वलित पर्वत श्रृंखला है जो पश्चिम पूर्व दिशा में सिंधु से लेकर ब्रह्मपुत्र तक फैली है
2,400 किमी० – लंबाई, कश्मीर में चौ० 400 km व अरुणाचल में 150 km है।

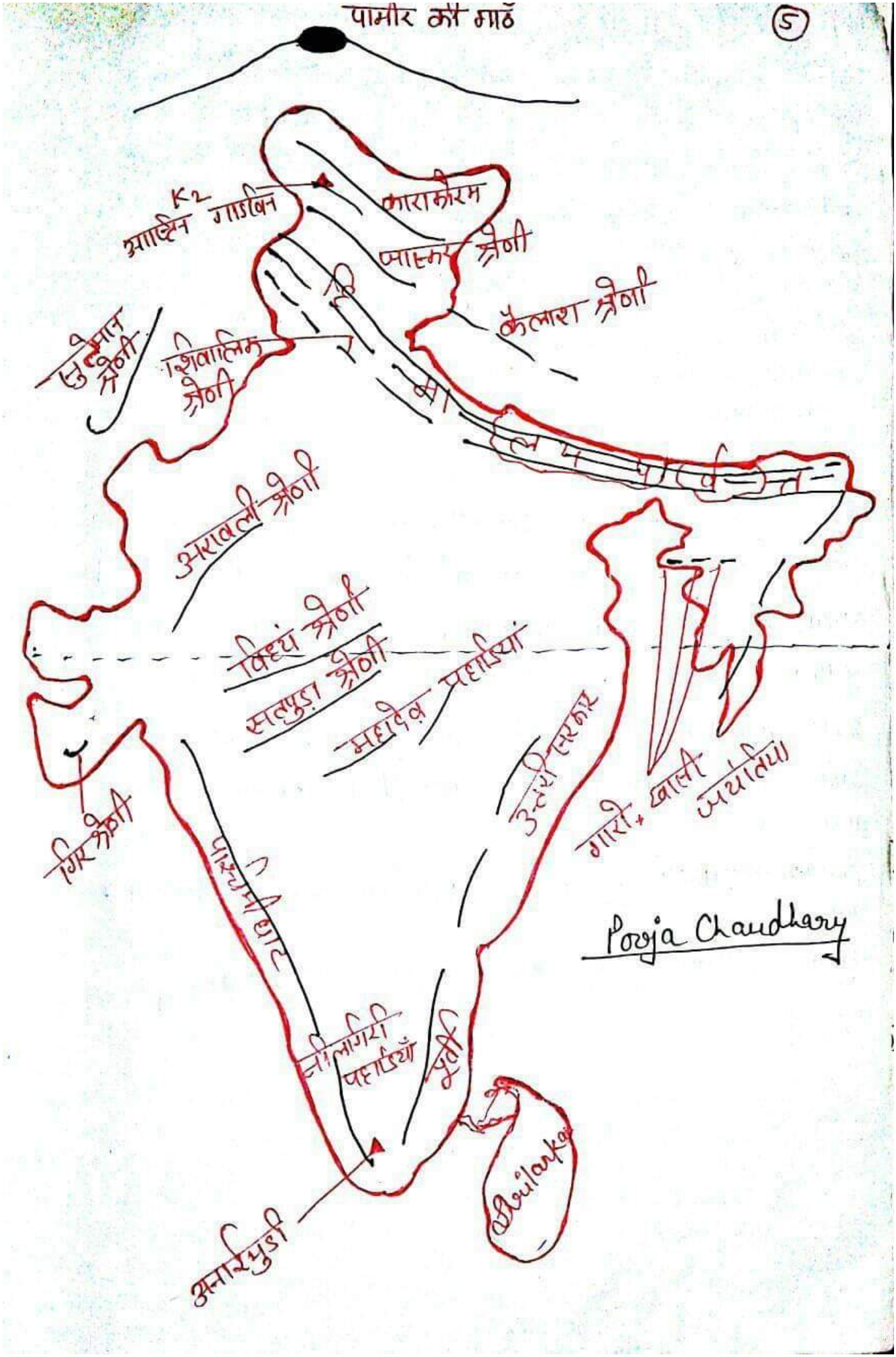

पामीर की गांठ
K2
गाडविन आस्टिन
काराकोरम
लद्दाख श्रेणी
जास्कर श्रेणी
कैलाश श्रेणी
सुलेमान श्रेणी
शिवालिक श्रेणी
हि मा ल य
अरावली श्रेणी
विंध्य श्रेणी
सतपुड़ा श्रेणी
महादेव पहाड़ियां
उत्तरी सरकार
गारो, खासी
जयंतिया
गिर श्रेणी
पश्चिमी घाट
पूर्वी
नीलगिरी पहाड़ियाँ
अनाईमुडी
Srilanka
Pooja Chaudhary

हिमालय के ऊँचे शीखर -

शीखर	देश	उ० (मी०)
माउंट एवरेस्ट	नेपाल	8,848
कंचनजुंगा	भारत	~~8,598~~ 8,586
मकालु	नेपाल	8481
धौलागिरी	नेपाल	8,172
नगां पर्वत	भारत	8126
अन्नपूर्णा	नेपाल	8078
नंदादेवी	भारत	7,817
कामेट	भारत	7,756
नामचा बरूआ	भारत	7,756
गुरूला मंधाता	नेपाल	7,728

Pooja Choudhary

देशांतरीय विस्तार हिमालय को तीन भागों में बाँट सकते हैं।

सबसे बड़ी श्रृंखला हिमालय - शीवालिक इससे लंबवत दून घाटी जाती है → देहरादून, कोटलीदून, पाटलीदून

उत्तर-दक्षिण के अलावा हिमालय को पश्चिम से पूर्व तक नदी-घाटियों की सीमा के आधार पर विभाजित किया गया है।

पंजाब हिमालय → सतलुज व सिंधु के बीच का हिमालय का भाग

कुमाऊँ हिमालय - सतलुज व काली नदियों के बीच।

② उत्तरी मैदान – तीन प्रमुख नदियों सिंधु, गंगा, ब्रह्मपुत्र व उनकी सहायक नदियों से बना है। जलोढ़ मृदा का बना है।
विस्तार – 7 लाख वर्ग कि.मी.
2,400 कि.मी. लं० व 240-320 कि.मी. चौड़ा
जलवायु अनुकूल होने के कारण कृषि के लिए महत्वपूर्ण है + भारत का अत्यार्धिक इत्पादक क्षेत्र है।

* तीन उपवर्गों में विभाजित किया गया है :-

गंगा का मैदान	पंजाब का मैदान	ब्रह्मपुत्र का मैदान
घग्घर व तिस्ता नदियों के बीच। क्षेत्र ⇒ हरियाणा, दिल्ली, U.P., बिहार, झारखंड	इस मैदान में दोआब क्षेत्रों की संख्या बहुत है।	ब्रह्मपुत्र का मैदान खासकर असम में फैला है।

Pooja Chaudhary

आकृति के आधार पर मैदान का विभाजन 4 वर्गों में :

- भाबर
- तराई
- भांगर
- खादर

↳ नदियाँ पर्वतों से नीचे उतरते समय ढाल पर 8-16 km. चौ० पट्टी में निक्षेपण करती हैं।
सभी सरिताएँ इसमें आकर विलुप्त हो जाती हैं।

- तराई – वह दलदली व नमी भरा क्षेत्र जहाँ सरिताएँ पुनः निकल आती हैं।
- भांगर → पुराने जलोढ़ का बना है नदियों के बाढ़ वाले मैदान के ऊपर स्थित है। चूनेदार निक्षेप इसमें पाए जाते हैं जिसे ककड़ कहते हैं।
- खादर :- बाढ़ वाले मैदानों के नये तथा युवा निक्षेपों को कहते हैं।
↳ निर्माण लगभग प्रत्येकवर्ष होता है, उपजाऊ होते हैं + गहन खेती के लिए आदर्श होते हैं।

③ प्रायद्वीपीय पठार -

पुराने क्रिस्टलीय, आग्नेय व रूपांतरित शैली से बना है। गोंडवाना भूमि के टूटने व अपवाह के कारण बना

भाग
- मध्य उच्च भूमि
- दक्कन का पठार

मध्य उच्च भूमि

वह भाग जो (पठार का) मालवा के पठार के अधिकतर भागों पर फैला है।

नदियां → चंबल, सिंध, बेतवा, केन द० पश्चिम से उ० पू० की तरफ बहती है।

पूर्वी विस्तार → बुंदेलखंड व बघेलखंड के नाम से जाना जाता है।

दक्कन का पठार

त्रिभुजाकार भू-भाग है व नर्मदा के द० में स्थित है पश्चिम में ऊँचा + पूर्व में इसकी ढाल कम है। जिसे मेघालय / कार्बी एंगलोंग पठार / उत्तर कचार पहाड़ी कहा जाता है।

एक भ्रंश की वजह से छोटा नागपुर पठार से अलग हो गया

Pooja Chaudhary

पूर्वी घाट

विस्तार महानदी — द० में नीलगिरी तक

विस्तार सतत नहीं है

द० पश्चिम में शेवराय व जवादी की पहाड़ियाँ स्थित है।

ऊँची शिखर - महेन्द्रगिरी

पश्चिमी घाट

पूर्वी से ऊँचे है

900 - 1,600 मी०

पर्वतीय वर्षा होती है

उत्तर - द० की ओर ऊँचाई बढती है

ऊँचे शिखर अनाईमुडी, डोडाबेटा

* उदगमंडलम → ऊटी के नाम से जाना जाता है।

* प्रायद्वीपीय पठार ⇒ विशेषता → यहां काली मृदा पाई जाती है। दक्कन ट्रैप के नाम से जाना जाता है

उत्पत्ति - ज्वालामुखी से

शैल आग्नेय है जिसका अपरदन होकर काली मृदा बनी।

विस्तार → गुजरात ——→ दिल्ली तक दक्षिण पश्चिम एवं उत्तर पूर्व दिशा में फैली है।

(4) भारतीय मरुस्थल - थार मरुस्थल → अरावली पहाड़ी के पश्चिमी किनारे पर स्थित ↓ बालू के टिब्बों से ढका + 150 मि.मी. से कम वर्षा होती है यहाँ

सबसे बड़ी नदी → लूनी

बरखान (अर्धचंद्राकार बालू का टीला) पाए जाते हैं।

जैसलमेर में बरखान के समूह देखे जा सकते हैं।

(5) तटीय मैदान - पश्चिम में अरब सागर से ——→ पू० में बंगाल की खाड़ी तक विस्तृत हैं।

Pooja Chaudhary

↳ पश्चिमी तट, पश्चिमी घाट व अरब सागर के बीच स्थित एक संकीर्ण मैदान है।

→ भाग - (3)

- उत्तरी कोंकण (मुंबई तथा गोवा)
- मध्य कन्नड़ मैदान
- दक्षिणी मालाबार तट

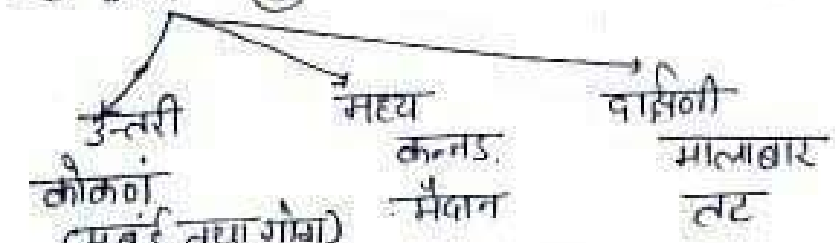

उत्तरी सरकार के नाम से उत्तरी भाग में जाना जाता है
दक्षिणी भाग में कोरोमंडल तट के नाम से जाना जाता है
जिसमें - महानदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, डेल्टा का निर्माण करती हैं।

(6) द्वीप समूह - लक्षद्वीप - 32 वर्ग km के छोटे से क्षेत्र में फैला है। ↳ प्रशासनिक मुख्यालय = कावारत्ती (राजधानी)।

पिटली द्वीप - मनुष्य का निवास नहीं, पक्षी अभयारण्य है

अंडमान और निकोबार - देश की रक्षा के लिए बेहद महत्वपूर्ण है

इन द्वीप समूहों में विविधता पूर्ण पादप व जंतु पाए जाते हैं।

Class- IXth, Geography

अपवाह

↓

एक क्षेत्र के नदी तंत्र की व्याख्या करता है।

• **अपवाह द्रोणी** - नदी तंत्र द्वारा जिस क्षेत्र का जल प्रवाहित होता है।

• **जल विभाजक** – पर्वत या उच्च भूमि जो दो ~~कोशिकें~~ पड़ोसी अपवाह द्रोणियों को अलग करे।

* विश्व की सबसे बड़ी अपवाह द्रोणी अमेजन नदी की है

भारत में अपवाह तंत्र :- का विभाजन भौगोलिक आकृतियों के द्वारा होता है।

इस आधार पर भारत की नदियों दो मुख्य भागों में विभाजित किया गया है :-

Pooja Chaudhary

हिमालय की नदियाँ	प्रायद्वीपीय नदियाँ
बारहमासी होती हैं सालभर पानी रहता है जल वर्षा के अलावा हिम के पिघलने से भी मिलता है उत्पत्ति से लेकर समुद्र तक का लंबा रास्ता तय करती हैं साथ ही सिल्ट व बालू को बहाकर लाती हैं विसर्प, गोखुर झील व अन्य निक्षेपण आकृति व डेल्टा बनाती हैं दो नदियाँ मुख्य हैं :- सिंधु और ब्रह्मपुत्र।	मौसमी होती हैं। वर्षा पर निर्भर करती हैं लंबाई कम व ये छिछली होती हैं। पश्चिम की तरफ बहती हैं जो केंद्रीय उच्च भूमि से निकल हैं। अधिकतर नदियाँ पश्चिमी घाट से निकलती हैं व बंगाल की खाड़ी की तरफ बहती हैं। ~~खबी~~

हिमालय की नदियां :-

सिंधु, गंगा, ब्रह्मपुत्र प्रमुख नदियाँ हैं :-

ये लंबी नदियां हैं व इनमें अनेक सहायक नदियां आकर मिलती हैं।

• **नदी तंत्र** :- किसी नदी व उसकी सहायक नदियों को कहते हैं।

भारत की मुख्य नदियाँ और झीलें

Pooja Chaudhary

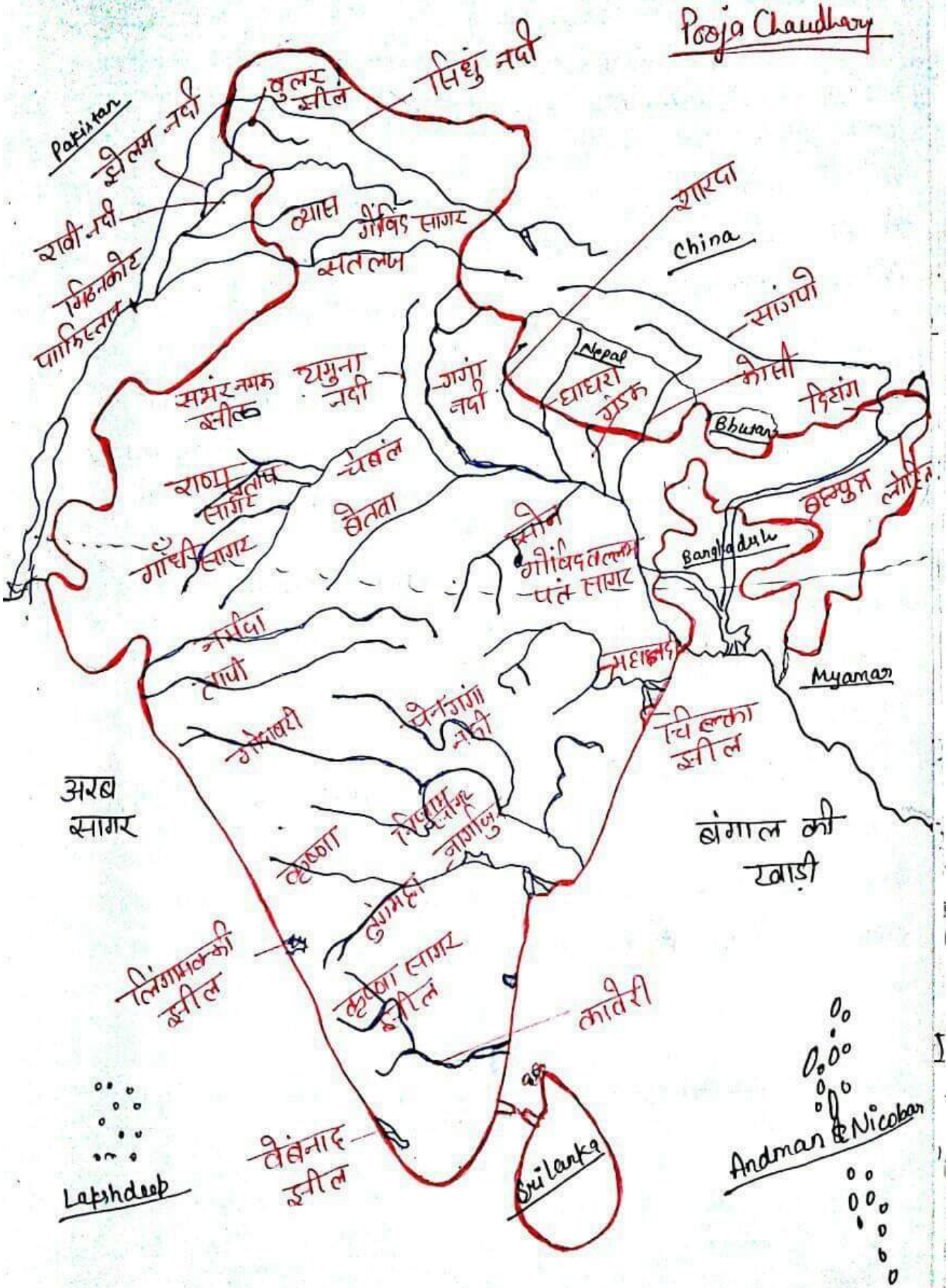

✦ सिंधु नदी तंत्र :- उद्गम - मानसरोवर झील के निकट तिब्बत
भारत मे J&K से प्रवेश करती है, गार्ज का निर्माण करती है
सहायक नदियाँ - जास्कर, नुब्रा, श्योक, हुंजा
पाकिस्तान में मिठनकोट में सतलुज से मिलती है
अरब सागर में गिरती है।
1/3 से अधिक भाग भारत के J&K, Himachal, Punjab में है बाकी पाकिस्तान में
लं० ⇒ 2,900 कि० मी० यह विश्व की लम्बी नदियों में से एक है।

Pooja Chaudhary

✦ गंगा नदी तंत्र :- मुख्य धारा भागीरथी हिमानी गंगोत्री से निकलकर उत्तराखण्ड के देवप्रयाग में अलकनंदा से मिलती है
~~कई ओर से~~ यमुना - गंगा की पाई ओर समांतर बहती है व इलाहाबाद में गंगा से मिलती है
हिमालय के यमुनोत्री हिमानी से निकलती है

⇒ घाघरा, गंडक, कोसी - नेपाल हिमालय से निकलती है + बाढ़ भी लाती है + मिट्टी को कृषि योग्य भी बनाती है।
↳ सहायक गंगा की
↓
अन्य ⇒ चंबल, बेतवा, सोन → उद्गम → अर्ध शुष्क क्षेत्रों से
लंबाई व पानी की मात्रा कम होती है।

गंगा पूर्व मे पं० बंगाल के फरक्का तक बहती है यहाँ डेल्टा बनाती सबसे उत्तरी बिंदु है यहाँ से नदी दो भागों में बँटती है

* ब्रह्मपुत्र नदी तंत्र :- तिब्बत के मानसरोवर झील के पास से उद्गम
↳ लंबाई सिंधु से अधिक
• अधिकतर मार्ग भारत के बाहर से तय करती है
• नामचा बारवा शिखर के पास पहुँचकर भारत में U के (english word) आकार में Arunachal के मार्ग से प्रवेश करती है यहाँ इसे दिहांग के नाम से जाना जाता है
• सहायक - दिबांग, लोहित, केनुला व अन्य सहायक मिलकर असम में ब्रह्मपुत्र का निर्माण करती हैं।
• भारत में उच्च वर्षा वाले क्षेत्र से होकर गुजरती है। बहुत से नदीय द्वीपों का निर्माण करती है
• माजुली द्वीप - इसी नदी पर है। Pooja Chaudhary

प्रायद्वीपीय नदियाँ :- महानदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी पूर्व की ओर बहकर बंगाल की खाड़ी में जा गिरती है
अपने मुहाने पर डेल्टा का निर्माण करती हैं
पश्चिम की तरफ केवल नर्मदा व तापी है बहती है व ज्वारनद मुख का निर्माण करती है

• झील - पृथ्वी की सतह के गर्त वाले भाग में जहाँ जल जमा हो जाता है
↳ भारत में अनेक प्रकार की झीलें हैं - अधिकतर स्थायी होती हैं कुछ में केवल वर्षा ऋतु में पानी होता है।
• गोखुर झील = विसर्प नदी ~~वाले~~ बाढ वाले क्षेत्रों ~~में~~ नदीय कटकर निर्माण होता है

• लैगून झील - रोधिका तटीय क्षेत्रों में इसका निर्माण करते हैं e.g. - चिल्का झील, पुलीकट झील, कोलेरू झील
• मौसमी झील = अंतर्देशीय भागों में पाई जाती हैं।
↳ e.g. राजस्थान की सांभर झील, जो लवण जल वाली झील है।

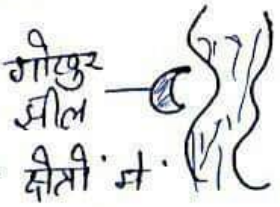

• मीठे पानी की झील :- हिमानियों द्वारा बनती है हिमनद के पिघलने से

e.g. कश्मीर की वुलर झील → भारत की सबसे बड़ी मीठे पानी की झील है जो की प्राकृतिक है।

अन्य झीलें :- डल झील, भीमताल, नैनीताल, लोकताक, बड़ापानी

* राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना *

16 राज्यों की 27 नदियों के किनारे बसे 152 शहर शामिल हैं इसमें 57 नदियों में प्रदूषण कम करने पर काम किया जा रहा है

प्रदूषण को कम करने के लिए 215 योजनाओं को स्वीकृति दी गई है Pooja Chaudhary

अभी तक 69 योजनाएं शुरू की जा चुकी हैं।

लक्ष्य ⇒ लाखों लीटर प्रदूषित जल को रोकर इसे परिवर्तित करने का

→ 1985 में आरंभ — पहला चरण गंगा कार्य योजना के क्रिया कलापों का था जिसे 31 मार्च, 2000 को बंद भी किया गया

जलवायु

किसी विशाल क्षेत्र में जब एक लंबे समय तक (30 वर्ष से अधिक जब कोई मौसम रुक जाता है — जलवायु

मौसम — एक विशेष समय में एक क्षेत्र के वायुमंडल की अवस्था को बताता है।

→ अवस्था बदलती रहती है

मानसून → अर्थ : एक वर्ष में ऋतु के अनुसार वायु की दिशा में होने वाले बदलाव।

भारत की जलवायु → मानसूनी है — एशिया में इस तरह की जलवायु दक्षिण व द० पू० में पाई जाती है।

जलवायु नियंत्रण कारक → ⑥ अक्षांश, ऊँचाई, वायुदाब, पवन तंत्र, समुद्र से दूरी, महासागरीय धाराएँ, उच्चावच लक्षण।

⇒ विषुवत रेखा से ध्रुवों की ओर जाने पर तापमान घटेगा

⇒ पृथ्वी की सतह से ऊँचाई पर तापमान घटता है क्योंकि वहाँ वायुमंडल की सघनता कम हो जाती है। यही कारण है कि गर्मी के मौसम में भी पहाड़ियाँ ठंडी होती हैं।

⇒ वायु दाब व पवन तंत्र - तापमान व वर्षण के वितरण को प्रभावित करता है

⇒ समुद्र का जलवायु का समकारी प्रभाव पड़ता है यह समुद्र से दूरी बढ़ने पर कम हो जाता है

⇒ महासागरीय धाराएँ समुद्र से तट की ओर चलने वाली हवाओं के साथ तटीय क्षेत्र की जलवायु को प्रभावित करती हैं।

⇒ उच्चावच → जलवायु निर्धारण में महत्वपूर्ण। ऊँचे पर्वत ठंडी अथवा गर्म वायु को अवरोधित करते हैं। वर्षा लाने वाली वायु को रोककर वर्षा का कारण भी बनते हैं।

Pooja Chaudhary

* भारत उत्तर पूर्वी व्यापारिक पवनों वाले क्षेत्र में स्थित है

उत्तरी गोलार्द्ध के उपोष्ण कटिबंधीय उच्च दाब पेटियों से उत्पन्न होती हैं।

+ दक्षिण की तरफ बहती हैं मगर कोरिआलिस बल की वजह से ये पाई तरफ विक्षेपित होकर निम्न दाबवाले क्षेत्रों की ओर बढ़ती हैं।

+ कोरिआलिस बल :- पृथ्वी के घूर्णन की वजह से उत्पन्न होता है जो कि आभासी बल होता है। इसकी वजह से पवने उत्तरी गोलार्द्ध में पाई व दक्षिणी गोलार्द्ध में बाईं ओर विक्षेपित हो जाती हैं।
फैरेल का नियम भी कहते हैं।

* **जेट धाराएँ** – क्षोभमडलं में 12,000 मी० से अधिक ऊँचाई पर बहनी वाली पश्चिमी हवाएं हैं।
गर्मी मे गति ⇒ 110 कि०मी०/ घटां
सर्दी में गति ⇒ 184 कि०मी०/ घटां
हालांकि बहुत सी जेट धाराओं को पहचाना गया है जिनमें सबसे स्थिर हैं :- मध्य अक्षांशीय व उपोष्ण कटिबंधीय जेट धाराएँ

Pooja Chaudhary

भारतीय मानसून

भारत की जलवायु को मानसूनी जलवायु भी कहते हैं।

ग्रीष्मकालीन मानसून – गर्मियों में सूर्य की किरणें सीधी कर्क रेखा पर पड़ती है जिससे भारत में तापमान बढ़ जाता है व निम्न वायुदाब का क्षेत्र बन जाता है यहाँ जिसने हिन्द महासागर से चलने वाली हवाएं अपने साथ नमी लेकर पहुचंती है। इन्हीं नमी युक्त पवनों को मानसून कहते है

भारत की त्रिभुजाकार आकृति होने की वजह से यह मानसून दो भागो में बट जाता है।

(1) **अरब सागर** – इस मानसून को दक्षिणी पश्चिमी मानसून भी कहते है यह मानसून तीन धाराओ में बटकर भारत में प्रवेश करता है।

(i) **पहली धारा** – केरल के तटो पर सबसे पहले वर्षा कराती है व केरल में पर्वतों के पश्चिमी ढलान पर ही समस्त बादल बरस जाते हैं, जिस कारण पूर्वी ढलान पर छाया वृष्टि क्षेत्र बन जाता है।

(ii) **दूसरी धारा** – कर्नाटक व मध्य प्रदेश में नदी घाटियों के बीच वर्षा कराती है।

(iii) **तीसरी धारा** – अरावली पर्वतों के समातंर जाकर राजस्थान में कोई अवरोध ना होने के कारण राजस्थान में बिना वर्षा कराए पजांब व हरियाणा के क्षेत्र में जाकर

वर्षा कराते हैं

T = Temperature
P = Pressure

ग्रीष्मकालीन मानसून

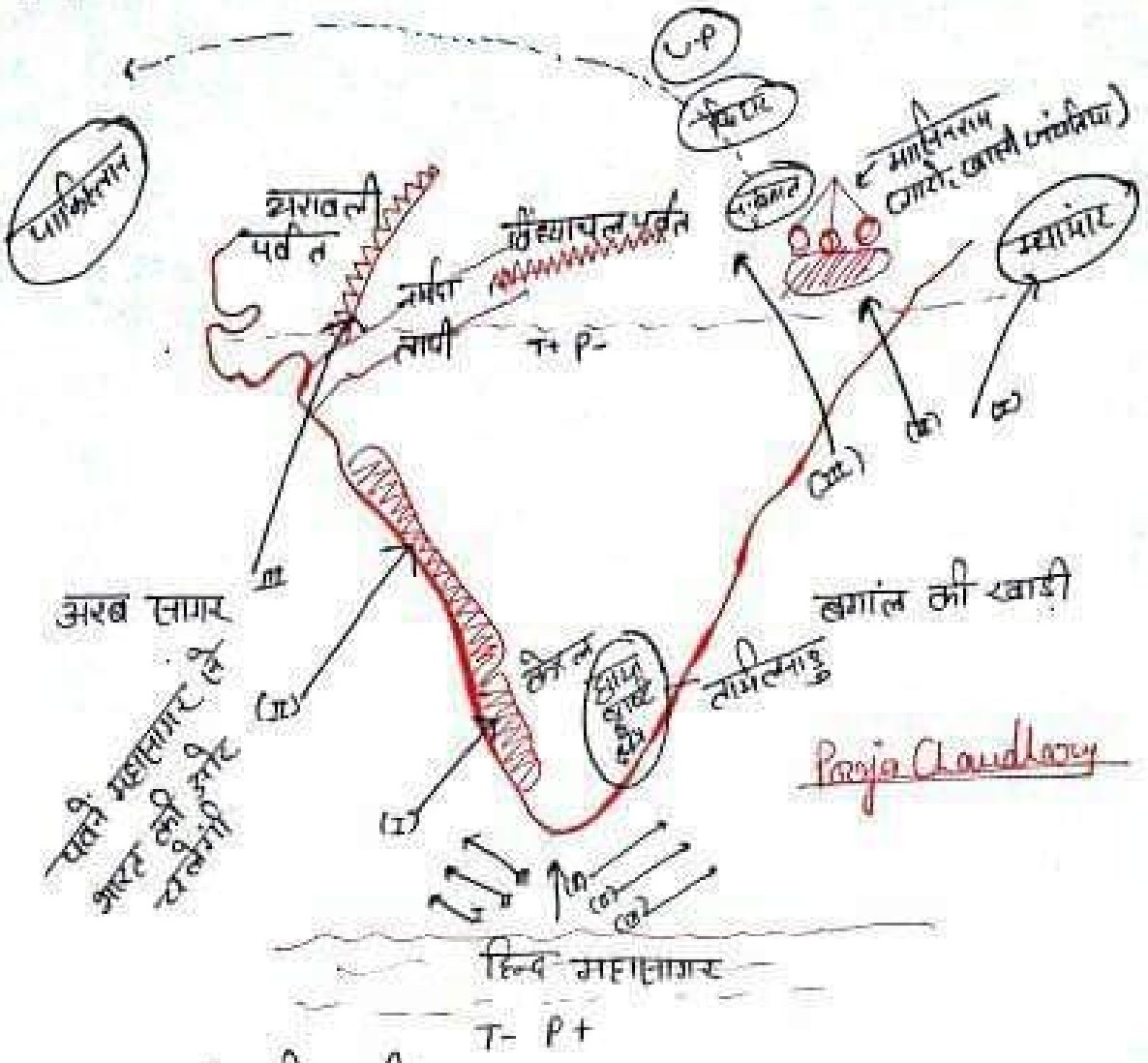

(ब) बंगाल की खाड़ी :-

(i) इस मानसून की पहली धारा म्यांमार की तरफ चली जाएगी।

(ii) दूसरी धारा गारो खासी जयन्तियों के मध्य फंसकर घन घोर वर्षा कराएगी [मासिनराम - सर्वाधिक वर्षा वाला क्षेत्र इन्हीं पहाड़ियों के मध्य स्थित है]

(iii) तीसरी धारा पं.बंगाल, बिहार, U.P. व पंजाब में वर्षा कराती हुई मध्य एशिया की ओर निकल जाएगी

शीतकालीन मानसून – सर्दियों में भारत में उच्च वायुदाब का क्षेत्र बन जाता है जिससे पवनें स्थल से हिन्द की ओर चलने लगती हैं।

पश्चिमी विक्षोभ के कारण पश्चिम से आने वाली जेट पवनें भू-मध्य सागर से नमी लेकर आती हैं व सर्दियों में उत्तर

भारत में वर्षा कराती हैं व यहाँ से इनकी दशा उ० पू० हो जाती है व अंत में ये पवनें तमिलनाडु के छाया वृष्टि क्षेत्र में वर्षा कराती हुई हिन्द ~~महा~~ महासागर की ओर चली जाती हैं।

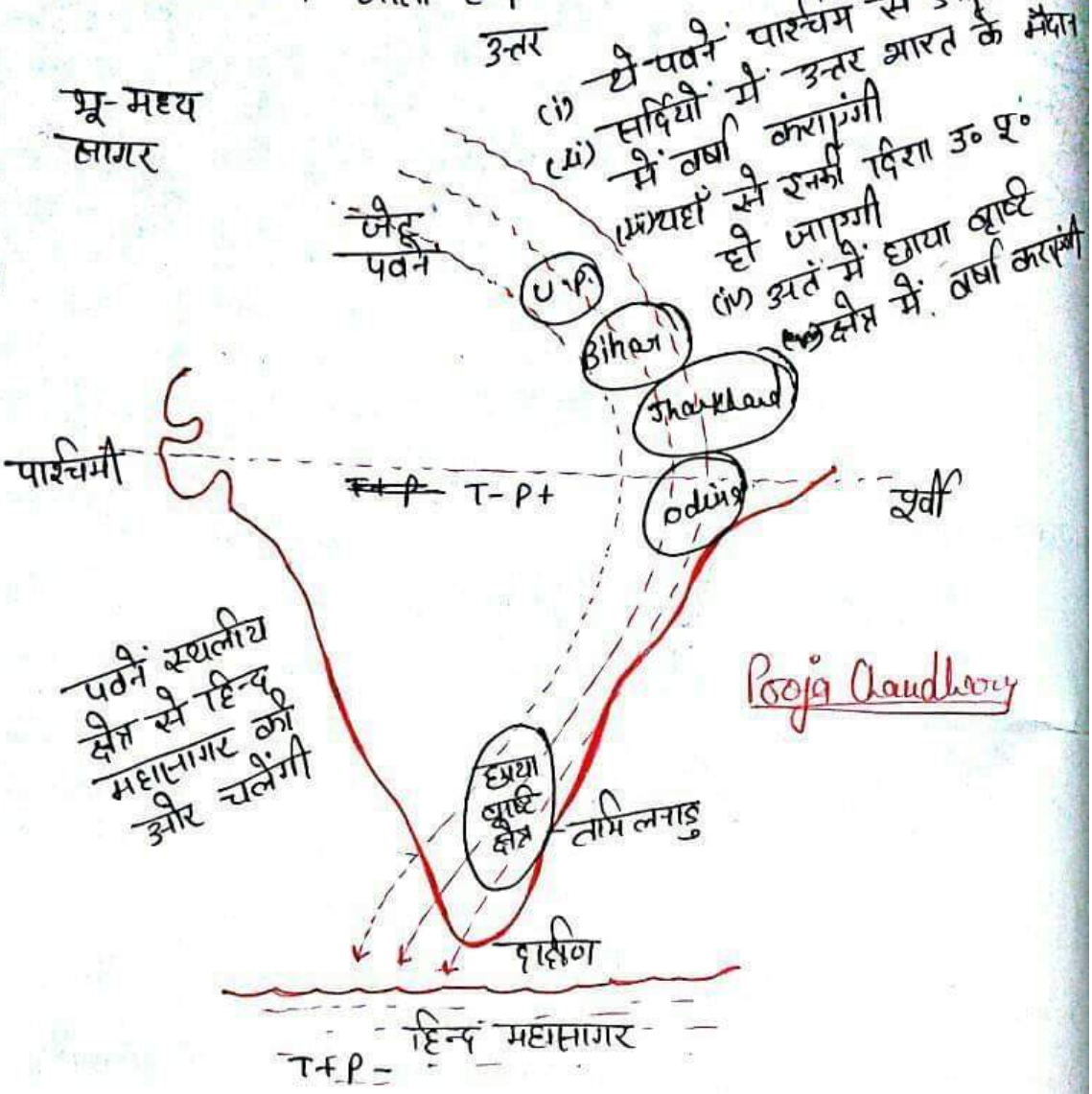

- एल-निनो – प्रशांत महासागर में दक्षिणी अमेरिका के पेरू तट पर निम्न वायुदाब उत्पन्न होने के कारण हिन्द महासा और पश्चिमी प्रशान्त महासागर से सभी पवनें मिलकर पूर्वी प्रशान्त महासागर तक पहुँचकर वर्षा कराती हैं जिससे दक्षिणी-पूर्वी एशियाई भाग में वर्षा नहीं होती व सूखा पड़ता है जिसका प्रभाव भारत में भी देखने को मिलता है।
- ला-निनो – एल निनो का विपरीत प्रभाव है जो कि एलनीनो के कुछ समय बाद अक्सर आता है।

प्राकृतिक वनस्पति और वन्य प्राणी

भारत विश्व के मुख्य 12 जैव विविधता वाले देशों में से एक है लगभग 47,000 विभिन्न जातियों भारत में पाई जाती है जिस वजह से विश्व में दसवें व एशिया में चौथे स्थान पर है। 15,000 फूल के पौधे है विश्व के फूलो के पौधे का 6% 90,000 जातियो के जानवर, विभिन्न प्रकार की मछलियाँ ताजे व समुद्री पानी में पाई जाती है। Pooja Chaudhary

प्राकृतिक वनस्पति → अर्थः वनस्पति का वह भाग जो मनुष्यकी सहायता के बिना पैदा होता है व लबें समय तक उस पर मानवी प्रभाव नहीं पड़ता ⇒ अक्षत वनस्पति

वनस्पति जगत ⇒ किसी विशेष क्षेत्र में पौधे की उत्पत्ति

वनस्पति व वन्य प्राणियो में विविधता / भिन्नता पाई जाती है जैसे धरातल — भू-भाग, मृदा, जलवायु, तापमान, वर्षण आदि के अलग-अलग होने के कारण

वनस्पति खंड़ो के तापमान की विशेषताएँ :-

वनस्पति खंड	औसत वार्षिक तापमान	जनवरी से औसत तापमान (डिग्री से०)	टिप्पणी
उष्ण	24°C से अधिक	18°C से अधिक	कोई पाला नहीं
उपोष्ण	17°C – 24°C	10°C – 18°C	कभी-कभी पाला
शीतोष्ण	7°C – 17°C	-1°C – (-10)°C	कभी पाला कभी बर्फ
अल्पाइन	7°C से कम	-1°C से कम	बर्फ

अधिक वर्षा वाले क्षेत्र में ज्यादा सघन वन पाए जाते हैं कम वर्षा वाले वन की अपेक्षा।

* **पारिस्थितिक तंत्र** :- पृथ्वी पर पादपो व जीवों का वितरण मुख्य रूप से जलवायु द्वारा निर्धारित होता है।

किसी भी क्षेत्र के पादप तथा प्राणी आपस में तथा अपने भौतिक पर्यावरण से अंतर्संबंधित होते हैं व एक पारिस्थितिक

तंत्र का निर्माण करते हैं।

* बायोम (जीवोम) – धरातल पर एक विशिष्ट प्रकार की वनस्पति या प्राणी जीवन वाले विशाल पारिस्थितिक तंत्र
  → पहचान पादप पर आधारित होती है।

× वनस्पति के प्रकार :- (5)

(1) उष्णकटिबंधीय वन (सदाबहार)
(2) उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन
(3) उष्ण कटिबंधीय कंटीले वन तथा झाड़ियाँ
(4) पर्वतीय वन
(5) मैंग्रोव वन

Pooja Chaudhary

(1) उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन :- अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में पाए जाएंगे। वर्ष भर गर्म व आर्द्र रहते हैं।

→ 60 मी० या उससे अधिक ऊँचाई
→ पतझड़ का कोई निश्चित समय नहीं
→ वृक्ष = आबनूस, महोगनी, रोजवुड, रबड़, सिंकोना
→ जानवर = हाथी, बंदर, लैमूर, हिरण, एक सींग वाला गैंडा
→ पक्षी ⇒ चमगादड़ व रेंगने वाले जीव।

(2) उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन -

→ मानसूनी वन भी कहते हैं।
→ वर्षा : 70 cm - 200 cm तक
→ 6-8 सप्ताह में पत्तियां गिरा देते हैं।

प्रमुख प्रजाति ⇒ बांस, साल, शीशम, चंदन, शहतूत आदि

* शुष्क पर्णपाती वन ⇒ 70 cm - 100 cm वर्षा

U.P, Bihar के मैदान में पाए जाते हैं

वृक्ष ⇒ सागौन, साल, पीपल, नीम

जानवर ⇒ सिंह, शेर, सूअर, हिरण, हाथी

पक्षी ⇒ छिपकली, साँप, कछुए

इन क्षेत्रों को साफ करके खेती के लिए उपयोग किया जा रहा है।

प्राकृतिक वनस्पति

- → उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन
- → उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन
- → पर्वतीय वन
- → मैंग्रोव वन
- → उष्णकटिबंधीय कंटीले वन

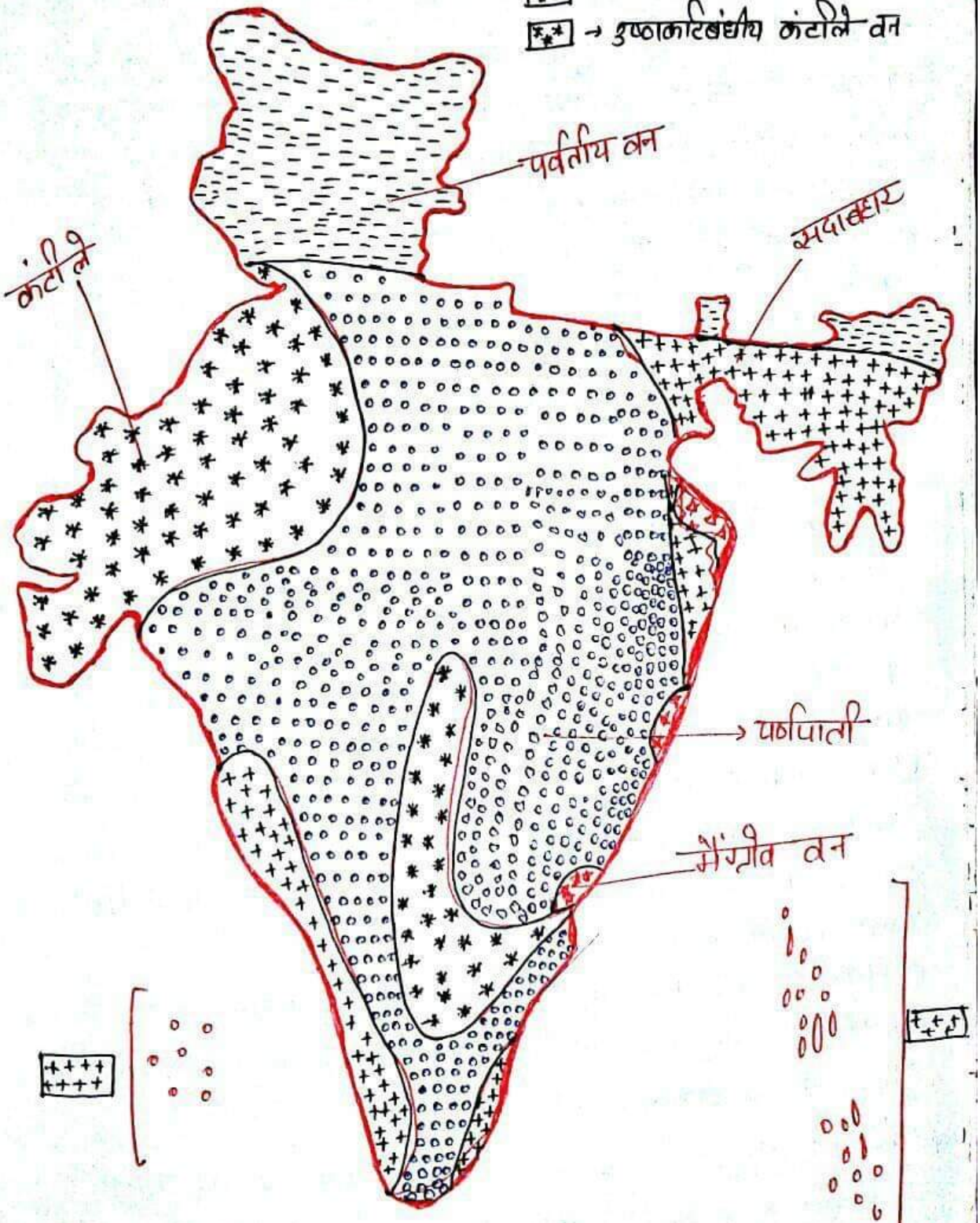

कँटीले वन व झाड़ियाँ :-

70 cm से कम वर्षा होती है

उ० पश्चिमी भाग में पाई जाती - Gujrat, Raj., Chattisgarh, M.P., U.P., Hariyana etc

प्रजातियाँ - खजूर, नागफनी, अकासिया, यूफोरबिया

जानवर ⇒ चूहा, खरगोश, लोमड़ी, भेड़िया, शेर, सिंह, जंगली गधा, घोड़े, ऊँट पाए जाते हैं।

ये वृक्ष जो यहाँ पाए जाते हैं इनकी जड़ें लंबी व जल की तलाश में चारों तरफ फैली रहती हैं।

पत्तियाँ छोटी होती हैं ताकि वाष्पीकरण कम से कम हो सके।

Pooja Chaudhary

पर्वतीय वन :- तापमान में कमी और ऊँचाई बढ़ने के साथ - साथ वनस्पति में काफी अंतर दिखाई देता है।

1,000 मी० - 2,000 मी० ऊँचाई पाई जाती है।

मुख्य ⇒ चौड़ी पत्ती वाले ओक तथा चेस्टनट जैसे वृक्षों की प्रधानता पाई जाती है।

1,500 - 3,000 मी० के ऊँचाई के शंकुधारी वन पाए जाते हैं जैसे - चीड़ (पाइन), देवदार, सिल्वर-फर, स्प्रूस, सीडर आदि।

अल्पाइन घास के मैदान पाए जाते हैं जिनका उपयोग गुज्जर और बक्करवाल घुमक्कड़ जातियाँ पशुचारण के लिए करती हैं।

जानवर - कश्मीरी मृग, चीतरा हिरण, जंगली भेड़, याक, हिम तेंदुआ, गिलहरी, कहीं - कहीं लाल पांडा, रीछ, भेड़ व बकरियाँ etc.

मैंग्रोव वन :- ज्वार - भाटा वाले क्षेत्रों की महत्वपूर्ण वनस्पति है। इसमें पौधे की जड़ें पानी में डूबी रहती हैं गंगा, ब्रह्मपुत्र, महानदी, गोदावरी, कृष्णा तथा कावेरी नदियों के डेल्टा भाग में यह वनस्पति मिलती है।

प्रसिद्ध जानवर = रॉयल टाइगर
↳ कछुए, मगरमच्छ, घड़ियाल, कई तरह के सांप
वृक्ष ⇒ नारियल, ताड़, क्योड़ा, ऐगार जो मजबूत लकड़ी देते हैं।

* भारत में वन्य प्राणी *

जीवों की लगभग 90,000 प्रजातियाँ पाई जाती हैं, पक्षियों की लगभग 2,000 से अधिक प्रजातियाँ पाई जाती हैं जो कि कुल विश्व का 13% है।
मछलियों की 2,546 प्रजातियाँ पाई जाती हैं। विश्व का लगभग 12%।
भारत में विश्व के 5-8% तक उभयचारी, सरीसृप, स्तनधारी जानवर पाए जाते हैं।
↳ हाथी - सबसे महत्वपूर्ण

Pooja Chaudhary

भारत विश्व का अकेला ऐसा देश है जहाँ शेर और बाघ दोनों ही पाए जाते हैं।
भारतीय शेरों का प्राकृतिक वास - गुजरात में गिर के जंगल
हिमालयी क्षेत्र में पाए जाने वाले जानवर कठोर जलवायु को सहन करने वाले होते हैं।
जानवर - याक, गुच्छेदार सींग वाला बैल, बारहसिंगा, भरल, जंगली भेड़, कियांग व कहीं-कहीं लाल पांडा।
मगरमच्छ व घड़ियाल - नदियों, झीलों व समुद्री क्षेत्रों में पाए जाते हैं। ↳ मगरमच्छ की ऐसी प्रजाति जो केवल भारत में ही पाई जाती है।
प्रत्येक प्रजाति का पारिस्थितिक तंत्र में योगदान है इसलिए इनका संरक्षण अनिवार्य है। लगभग 1,300 प्रजातियाँ संकट में हैं 20 विनिष्ट हो चुकी हैं। संतुलन बिगड़ रहा है।

असंतुलन का कारण :- व्यवसाय के लिए शिकार करना
↳ रसायनिक और औद्योगिक अवशिष्ट
→ तेजाबी जमाव व प्रदूषण
→ विदेशी प्रजातियों का प्रवेश
→ कृषि व निवास के लिए वनों की अंधाधुंध कटाई

- सरकार ने पादपों और जीवों की सुरक्षा के लिए कई कदम जैसे - कुछ क्षेत्रों को आरक्षित कर दिया है।

चौदह जीव मण्डल निचय आरक्षित क्षेत्र

1 सुन्दरबन
2 मन्नार की खाड़ी
3 नीलगिरी
4 नन्दादेवी
5 नाकरेक
6 ग्रेट निकोबार
7 मानस
8 सिमलीपाल
9 दिहांग दिबांग
10 डिब्रू साइकोवा
11 अगस्त्यमलाई
12 कंचनजुंगा
13 पचमढ़ी
14 अचनकमर - अमरकंटक

- वित्तीय सहायता की योजना बनाई 1992 में सरकार ने पादप उद्यानों को देने के लिए Pooja Chaudhary
- पारिस्थितिकी संतुलन के लिए - शेर संरक्षण, गैंडा संरक्षण भारतीय भैंसा संरक्षण आदि योजनाएँ शुरू की।
- 89 National Park + 490 वन्य प्राणी अभयवन और कई चिड़ियाघर बनाए।

जनसंख्या

समाज एवं अर्थव्यवस्था के विकास में मानव का महत्वपूर्ण योगदान होता है। मानव स्वयं भी विभिन्न गुणों वाले संसाधन होते हैं।

• जनसंख्या वृद्धि - अर्थ → 10 वर्षों के भीतर किसी देश/राज्य के निवासियों की संख्या में हुआ परिवर्तन
दो प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है

सापेक्ष वृद्धि ← → (प्रतिवर्ष होने वाले परिवर्तन के द्वारा) वार्षिक वृद्धि दर

- **निरपेक्ष वृद्धि** → पहले की जनसंख्या में से बाद की जनसंख्या से घटाकर प्राप्त किया जाता है।

प्रति वर्ष 2% वृद्धि दर का अर्थ- दिए किसी वर्ष की मूल जनसंख्या में प्रत्येक 100 व्यक्तियों पर 2 व्यक्तियों की वृद्धि → वार्षिक वृद्धि दर

* 1981 में वृद्धि दर धीरे-धीरे कम होने लगी क्योंकि जन्म दर में तेजी से कमी आई थी। केवल 1990 में कुल जनसंख्या में 1820 लाख की वृद्धि हुई थी।

वर्तमान जनसंख्या की वार्षिक दर 155 लाख है।

~~20,45~~ 2,045 तक भारत चीन को पीछे छोड़ते हुए विश्व की सबसे अधिक आबादी वाला देश बन ~~जा~~ जाएगा।

जनसंख्या में होने वाले परिवर्तन की तीन क्रियाएँ प्रमुख हैं :-

Pooja Chaudhary

जन्मदर
1 वर्ष में प्रति 1000 व्यक्तियों में जितने जीवित बच्चों का जन्म होता है।
यह भारत में हमेशा मृत्युदर से अधिक रहा है

मृत्युदर
1 वर्ष में प्रति 1000 व्यक्तियों में मरने वालों की संख्या।
भारत की जनसंख्या में वृद्धि मृत्यु दर में तेज गिरावट ला रही है।

प्रवास दर
लोगों का एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जाकर रहना

- आंतरिक (देश के भीतर)
  ↓
  जनसंख्या में कोई परिवर्तन नहीं लाता मगर देश के भीतर जनसंख्या वितरण को प्रभावित करता है।
- अंतर्राष्ट्रीय (देशों के बीच)

आयु संरचना - किसी भी देश के विभिन्न आयु के समूहों के लोगों की संख्या बताती है।

↳ एक व्यक्ति की आयु उसकी इच्छा, खरीददारी तथा काम करने की क्षमता को पर्याप्त रूप से प्रभावित करती है।

* शहर की आबादी को सामान्य रूप से तीन वर्गों में बांटा जाता है।

बच्चे (15 वर्ष से कम)	व्यस्क (15 - 59 वर्ष)	वृद्ध (59 वर्ष से अधिक)
आर्थिक रूप से उत्पादनशील नहीं होते	आर्थिक रूप से तो उत्पादनशील व जैविक रूप से प्रजननशील होते हैं। कार्यशील वर्ग है।	आर्थिक रूप से उत्पादनशील व अवकाश प्राप्त हो सकते हैं।

Pooja Choudhary

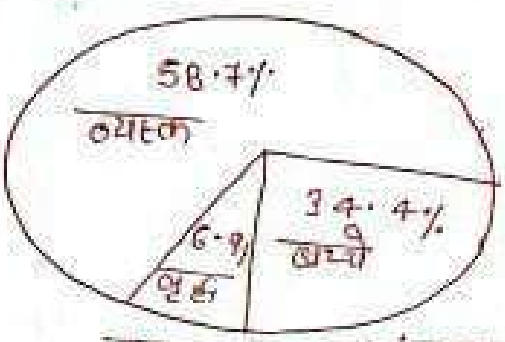

भारत - उम्र संरचना

लिंग अनुपात :- प्रति 1000 पुरुषों पर महिलाओं की संख्या

→ यह पुरुषों व महिलाओं के बीच की सीमा मापने का एक महत्वपूर्ण सामाजिक सूचक है।

साक्षरता दर - एक व्यक्ति जिसकी आयु 7 वर्ष या उससे अधिक हो व जो किसी भी भाषा को समझकर लिख या पढ़ सकता है वह साक्षर की श्रेणी में आता है।

व्यवसायिक संरचना :- विभिन्न प्रकार के व्यवसायों के अनुसार जनसंख्या का वितरण

→ श्रेणियां - ③

प्राथमिक	द्वितीयक	तृतीयक
कृषि, पशुपालन, वृक्षारोपण, मछली पालन, खनन	उद्योग, भवन, निर्माण कार्य	परिवहन, संचार, वाणिज्य, प्रशासन सेवाएं

* किशोर जनसंख्या - भारत की कुल जनसंख्या का 5वाँ भाग
↳ 10-19 वर्ष की आयु वर्ग के होते हैं।
↳ भविष्य के सबसे महत्वपूर्ण मानव संसाधन हैं।

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000-

- 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को फ्री शिक्षा देना
- व्यापक स्तर पर बच्चों को बिमारियों से छुटकारा दिलाना
- कम उम्र में हो रही लड़कियों की शादी को रोकना
- गर्भनिरोधक सेवाओं को पहुँच और खरीद के भीतर बनाना।
- खाद्य संपूरक और पौषणिक सेवाएँ उपलब्ध करवाना

किसी भी राष्ट्र के लिए वहाँ के लोग बहुमूल्य संसाधन होते हैं।

Complete Class 9th Ncert Geography ☺

Pooja Chaudhary